



विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध

सरस्वती शिशु मन्दिर

सी-41, सेक्टर-12, नोएडा



0120-4545608

WEBSITE: ssmnoida.in

GMAIL: ssm.noida@gmail.com

विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से संबद्ध
सरस्वती शिशु मन्दिर ,सी - 41, सेक्टर - 12, नोएडा
मासिक ई-पत्रिका, सितम्बर - 2025

ज्ञानोदय (अंक-59)

संरक्षक मंडल

श्री प्रताप मेहता
श्री प्रदीप भारद्वाज
श्री कृष्ण कुमार बंसल
श्री राजीव नाईक
श्री नितीश आर्य
श्री जितेन्द्र कुमार गौतम
श्री सुशील कुमार

मार्गदर्शक

श्री देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक

श्री लेखराज सिंह (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

संपादक मंडल

श्री दीपक कुमार
ब०अनु सिंह

अनुक्रमणिका

- प्रधानाचार्य जी की कलम से
- गांधी जयंती
- शास्त्री जयंती
- भारतीय वायुसेना दिवस
- विश्व डाक दिवस
- धन्वन्तरि जयंती
- स्वामी रामतीर्थ जयंती
- गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती
- सरदार पटेल जयंती
- राष्ट्रीय एकता दिवस
- विभागीय गणित और विज्ञान मेला
- शिक्षक दिवस
- अनन्त चतुर्दशी



- प्रांतीय विज्ञान एवं वैदिक गणित मेला
- प्रांतीय संस्कृति महोत्सव
- ओजोन दिवस
- विश्वकर्मा दिवस
- अतिथि आगमन
- महाराजा अग्रसेन जयंती
- पं दीनदयाल उपाध्याय जयंती
- हवन कार्यक्रम
- बताओ तो जानें
- पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी



भारतीय वायुसेना दिवस



हर वर्ष 8 अक्टूबर को पूरे देश में भारतीय वायुसेना दिवस बड़े गर्व और सम्मान के साथ मनाया जाता है। यह दिन भारतीय वायुसेना की स्थापना और उसकी अदम्य शक्ति, साहस तथा देशभक्ति का प्रतीक है। भारतीय वायुसेना की स्थापना 8 अक्टूबर 1932 को ब्रिटिश शासन के दौरान की गई थी। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद यह सेना भारतीय सशस्त्र बलों का एक अत्यंत महत्वपूर्ण अंग बन गई।

भारतीय वायुसेना का मुख्य उद्देश्य देश के आकाशीय क्षेत्र की सुरक्षा करना है। वायुसेना के वीर जवान अपनी जान की परवाह किए बिना सीमाओं की रक्षा करते हैं और संकट के समय देशवासियों की सहायता के लिए सदैव तत्पर रहते हैं। चाहे युद्ध की स्थिति हो या प्राकृतिक आपदा, वायुसेना हमेशा सबसे पहले राहत और सहायता पहुँचाने का कार्य करती है।

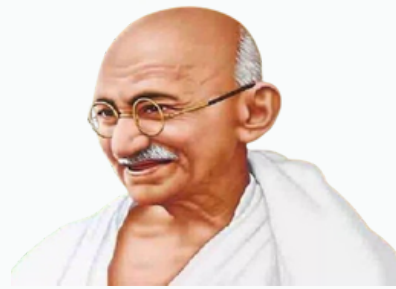
वायुसेना दिवस के अवसर पर दिल्ली के पास गाजियाबाद स्थित हिंडन एयरबेस पर भव्य परेड और हवाई प्रदर्शन आयोजित किया जाता है। इस दिन भारतीय वायुसेना के जांबाज़ पायलट विभिन्न युद्धक विमानों जैसे राफेल, सुखोई, मिराज, तेजस आदि के शानदार हवाई करतब दिखाकर देशवासियों का मन गर्व से भर देते हैं। भारतीय वायुसेना का आदर्श वाक्य है – **"नभः स्पृशं दीप्तम्"**, जिसका अर्थ है "दीप्त आकाश को स्पर्श करो"। यह वाक्य वायुसेना के साहस, अनुशासन और अदम्य आत्मविश्वास को दर्शाता है।

आज भारतीय वायुसेना न केवल एशिया में बल्कि पूरे विश्व में अपनी तकनीकी क्षमता, अनुशासन और शौर्य के लिए प्रसिद्ध है। यह हमारे राष्ट्र की रक्षा के साथ-साथ देश के विकास और आपदा प्रबंधन में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। भारतीय वायुसेना दिवस हमें यह याद दिलाता है कि देश की सुरक्षा और सम्मान के लिए हमारे सैनिक दिन-रात तत्पर रहते हैं। इस दिन हमें उनके समर्पण, पराक्रम और बलिदान को नमन करना चाहिए।

जय हिन्द! जय वायुसेना!

देवेन्द्र शर्मा (प्रधानाचार्य)
सरस्वती शिशु मन्दिर, नोएडा

गांधी जयंती



महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता करमचंद गांधी पोरबंदर के दीवान थे और माता पुतलीबाई धार्मिक प्रवृत्ति की महिला थीं। महात्मा गांधी का पूरा नाम मोहनदास करमचंद गांधी था। वे सत्य, अहिंसा और प्रेम के पुजारी थे। गांधीजी ने अपनी प्रारंभिक शिक्षा पोरबंदर और राजकोट में प्राप्त की तथा आगे की पढ़ाई इंग्लैंड से की। वकालत की डिग्री प्राप्त करने के बाद वे दक्षिण अफ्रीका गए, जहाँ उन्होंने रंगभेद के विरुद्ध आंदोलन चलाया। यहीं से उनके जीवन में सत्य और अहिंसा के सिद्धांतों का बीजारोपण हुआ।

भारत लौटने के बाद गांधीजी ने स्वतंत्रता आंदोलन को नई दिशा दी। उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध अनेक आंदोलनों का नेतृत्व किया, जैसे—असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग्रह, और भारत छोड़ो आंदोलन। उनका उद्देश्य भारत को अंग्रेजों के शासन से मुक्त कराना था, लेकिन उन्होंने कभी हिंसा का सहारा नहीं लिया। वे मानते थे कि अहिंसा ही सबसे बड़ी ताकत है।

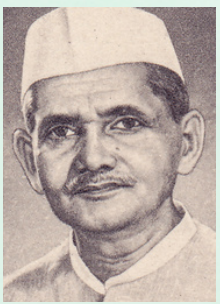
गांधीजी का जीवन अत्यंत सादगीपूर्ण था। वे खादी के कपड़े पहनते थे और चरखा चलाकर आत्मनिर्भरता का संदेश देते थे। उन्होंने समाज में छुआछूत, जात-पात और भेदभाव जैसी कुरीतियों के खिलाफ आवाज उठाई। उन्होंने “सर्व धर्म समभाव” का संदेश दिया और सभी धर्मों के लोगों को एकता का पाठ पढ़ाया। हर साल 2 अक्टूबर को हम गांधी जयंती मनाते हैं। यह दिन हमें सत्य, अहिंसा, स्वच्छता और सादगी के आदर्शों को अपनाने की प्रेरणा देता है। इस दिन पूरे देश में प्रार्थना सभाएँ, सफाई अभियान और उनके जीवन से जुड़ी गतिविधियाँ आयोजित की जाती हैं।

गांधीजी को “राष्ट्रपिता” कहा जाता है, क्योंकि उन्होंने भारत को आज़ादी दिलाने में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके विचार आज भी हमें सच्चाई, समानता और शांति के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते हैं।

निष्कर्ष: गांधी जयंती केवल एक राष्ट्रीय पर्व नहीं, बल्कि यह एक ऐसा अवसर है जब हम अपने जीवन में सत्य, अहिंसा और नैतिकता के सिद्धांतों को अपनाने का संकल्प लेते हैं। महात्मा गांधी का जीवन संदेश सदैव हमारे लिए मार्गदर्शक बना रहेगा।

अनु सिंह

अंक सम्पादक (ज्ञानोदय)



शास्त्री जयंती

भारत के महान नेताओं में से एक, लाल बहादुर शास्त्री जी का जन्म 2 अक्टूबर 1904 को उत्तर प्रदेश के मुगलसराय (अब पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर) में हुआ था। उनके पिता का नाम शारदा प्रसाद श्रीवास्तव और माता का नाम रामदुलारी देवी था। शास्त्री जी बचपन से ही ईमानदार, सरल और दृढ़ निश्चयी स्वभाव के थे। उनका जीवन सादगी और सेवा का एक प्रेरणास्रोत उदाहरण है।

लाल बहादुर शास्त्री जी ने देश की स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय भाग लिया। उन्होंने महात्मा गांधी के आदर्शों को अपने जीवन में अपनाया और सत्य, अहिंसा तथा स्वदेशी के मार्ग पर चले। भारत की आजादी के बाद वे देश की राजनीति में एक प्रमुख स्थान पर पहुँचे। उन्हें 1964 में पंडित जवाहरलाल नेहरू जी के निधन के बाद भारत का दूसरा प्रधानमंत्री बनने का गौरव प्राप्त हुआ।

प्रधानमंत्री के रूप में शास्त्री जी ने देश में अनेक महत्वपूर्ण निर्णय लिए। 1965 के भारत-पाक युद्ध के समय उन्होंने पूरे देश को एकता के सूत्र में बाँध दिया। उस कठिन समय में उन्होंने “जय जवान, जय किसान” का नारा दिया, जिसने देशवासियों में नई ऊर्जा और आत्मविश्वास भर दिया। यह नारा आज भी हर भारतीय के लिए प्रेरणा का स्रोत है। उन्होंने किसानों की मेहनत और सैनिकों के साहस को बराबर महत्व दिया।

शास्त्री जी सादगी के प्रतीक थे। उन्होंने कभी दिखावा नहीं किया और हमेशा जनता के सेवक बनकर कार्य किया। उनका जीवन हमें यह सिखाता है कि सच्ची देशभक्ति का अर्थ है – निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा करना।

11 जनवरी 1966 को ताशकंद में उनकी मृत्यु हो गई। उनकी मृत्यु रहस्यमय परिस्थितियों में हुई, लेकिन उनकी ईमानदारी, निष्ठा और देशभक्ति सदैव भारतीयों के हृदय में जीवित रहेगी।

लाल बहादुर शास्त्री जयंती हमें यह याद दिलाती है कि सादगी, ईमानदारी और कर्तव्यनिष्ठा से ही एक सशक्त और समृद्ध भारत का निर्माण किया जा सकता है।

जय जवान, जय किसान – जय शास्त्री

दीपक (आचार्य)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विश्व डाक दिवस



विश्व डाक दिवस का इतिहास :- डाक के इतिहास की बात करें तो उसको शुरू करने का मुख उद्देश्य सभी देशों के बीच पत्रों का आवागमन को सहज बनाने के लिए 9 अक्टूबर 1874 को जनरल पोस्टल यूनियन के गठन के लिए स्विट्जरलैंड में 22 देशों ने एक संधि पर हस्ताक्षर किया था। यही वजह है की 9 अक्टूबर को विश्व डाक दिवस के रूप में मनाया जाता है। हालाँकि यह संधि 1 जुलाई 1875 को अस्तित्व में आई। 1 अप्रैल 1879 जनरल पोस्टल यूनियन का नाम बदलकर यूनिवर्सल पोस्टल यूनियन कर दिया गया। प्रत्येक वर्ष लगभग 150 देश विश्व डाक दिवस मानते हैं। इस अवसर पर विभिन्न देश नयी सेवाएं भी आरम्भ करते हैं।

विश्व डाक दिवस के मुख्य उद्देश्य :- विश्व डाक दिवस का उद्देश्य ग्राहकों के बीच डाक विभाग के उत्पाद के बारे में जानकारी देना तथा उन्हें जागरूक करना और डाकघरों के बीच सामंजस्य स्थापित करना है तथा विश्व डाक दिवस का मूल उद्देश्य लोगों के बीच पोस्टल सेवा के बारे में प्रचार-प्रसार करना है और उसके महत्त्व को विस्तृत करना है। साथ ही लोगों के जीवन और राष्ट्र के सामाजिक और आर्थिक विकास में इसके योगदान के बारे में बताना है।

विश्व डाक दिवस समारोह आयोजन:- इस दिवस के आयोजन में विविध देशों से प्रतिनिधि भाग लेते हैं। इस आयोजन में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोगों को करने और इसकी महत्ता के बारे में बताने के लिए विविध कार्यक्रमों और गतिविधियों का आयोजन किया जाता है। प्रति वर्ष 150 से अधिक राष्ट्रों द्वारा विभिन्न तराईकों से विश्व डाक दिवस मनाया जाता है।

यद्यपि कई देशों में इस दिन को एक छुट्टी के रूप में मनाया जाता है। कुछ देशों में इस दिन नए डाक उत्पादों और सेवाओं को प्रस्तुत किया जाता है। यहाँ तक की इस दिवस अवसर पर पोस्ट विभाग में कार्यरत कुछ पदों और कर्मचारियों को उनके उत्कृष्ट सेवाओं के लिए इनाम दिया जाता है।

नए टिकटों की शुरुआत साथ डाक टिकटों पर प्रदर्शनियों का भी आयोजन किया जाता है। इस दिवस को डाकघरों और अन्य सार्वजनिक जगहों पर पोस्टलों को लगाया जाता है और इस दिवस की महत्ता के बारे में लोगों को बताया जाता है। साथ ही सम्मेलनों, सेमिनारों और कार्यशालाओं और सांस्कृतिक एवं मनोरंजक कार्यक्रमों को भी इस दिन आयोजित किया जाता है।

नेहा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



धन्वन्तरि जयंती

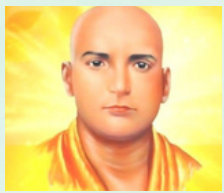
कार्तिक माह में कृष्णपक्ष की त्रयोदशी के अंधकार से शुक्लपक्ष के प्रकाश की ओर ले जाने वाले पांच दिवसीय दीपावली उत्सव का प्रथम पर्व धन त्रयोदशी है। इसे धन्वंतरि-जयंती के रूप में मनाया जाता है। क्योंकि सनातन ग्रंथों में धन्वंतरि को सृष्टि के पालनकर्त्ता भगवान विष्णु का स्वरूप माना गया है, जो देवताओं और असुरों के मध्य हुए संग्राम में समुद्र से इसी दिन अमृत कलश लेकर प्रकट हुए थे। धन्वंतरि को आयुर्वेद के जनक और तन-मन के स्वास्थ्य व चिकित्सा के देवता माना गया है। धन्वंतरि शब्द की व्याख्या में उस धनुष का बोध भी स्पष्ट होता है जो मन और बुद्धि से संचालित होता है।

आयुर्वेद के जनक भगवान धन्वंतरी की जयंती को आज हम धनतेरस के रूप में मनाते हैं। हर साल कार्तिक कृष्ण पक्ष की त्रयोदशी को धन्वंतरी दिवस के रूप में मनाया जाता है। भगवान धन्वंतरी के पृथ्वी पर अवतरण से पहले आयुर्वेद गुप्त अवस्था में था। उन्होंने आयुर्वेद को आठ अंगों में बांट कर समस्त रोगों की चिकित्सा पद्धति विकसित की।

आयुर्वेद जगत के प्रणेता तथा वैद्यक शास्त्र के देवता भगवान धन्वंतरि आरोग्य, सेहत, आयु और तेज के आराध्य देव हैं। सर्वभय व सर्वरोग नाशक देवचिकित्सक आरोग्यदेव धन्वंतरि प्राचीन भारत के एक महान चिकित्सक थे जिन्हें देव पद प्राप्त हुआ था। पौराणिक व धार्मिक मान्यतानुसार भगवान विष्णु के अवतार समझे जाने वाले धन्वन्तरी का पृथ्वी लोक में अवतरण समुद्र मंथन के समय हुआ था। शरद पूर्णिमा को चंद्रमा, कार्तिक द्वादशी को कामधेनु गाय, त्रयोदशी को धन्वंतरी, चतुर्दशी को काली माता और अमावस्या को भगवती लक्ष्मी जी का सागर से प्रादुर्भाव हुआ था। धन्वन्तरी ने इसी दिन आयुर्वेद का भी प्रादुर्भाव किया था। इसीलिये दीपावली के दो दिन पूर्व कार्तिक त्रयोदशी धनतेरस को आदि प्रणेता, जीवों के जीवन की रक्षा, स्वास्थ्य, स्वस्थ जीवन शैली के प्रदाता के रूप में प्रतिष्ठित तथा विष्णु के अवतार के रूप में पूज्य ऋषि धन्वन्तरी का अवतरण दिवस के रूप में मनाया जाता है और आरोग्य, सेहत, आयु और तेज के आराध्य देवता भगवान धन्वंतरि का ॐ धन्वंतरये नमः आदि मन्त्रों से प्रार्थना की जाती है कि वे समस्त जगत को निरोग कर मानव समाज को दीर्घायुष्य प्रदान करें।

दीपिका शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



स्वामी रामतीर्थ जयंती

स्वामी रामतीर्थ का जन्म सन् १८७३ की दीपावली के दिन पंजाब के गुजरावाला जिले मुरारीवाला ग्राम में पण्डित हीरानन्द गोस्वामी के एक धर्मनिष्ठ ब्राह्मण परिवार में हुआ था। इनके बचपन का नाम तीर्थराम था। विद्यार्थी जीवन में इन्होंने अनेक कष्टों का सामना किया। भूख और आर्थिक बदहाली के बीच भी उन्होंने अपनी माध्यमिक और फिर उच्च शिक्षा पूरी की। पिता ने बाल्यावस्था में ही उनका विवाह भी कर दिया था। वे उच्च शिक्षा के लिए लाहौर चले गए। सन् १८९१ में पंजाब विश्वविद्यालय की बी० ए० परीक्षा में प्रान्त भर में सर्वप्रथम आये। इसके लिए इन्हें ९० रुपये मासिक की छात्रवृत्ति भी मिली। अपने अत्यंत प्रिय विषय गणित में सर्वोच्च अंकों से एम० ए० उत्तीर्ण कर वे उसी कालेज में गणित के प्रोफेसर नियुक्त हो गए।[3] वे अपने वेतन का एक बड़ा हिस्सा निर्धन छात्रों के अध्ययन के लिये दे देते थे। इनका रहन-सहन बहुत ही साधारण था। लाहौर में ही उन्हें स्वामी विवेकानन्द के प्रवचन सुनने तथा सान्निध्य प्राप्त करने का अवसर मिला। उस समय वे पंजाब की सनातन धर्म सभा से जुड़े हुए थे।

वर्ष १९०१ में प्रो० तीर्थराम ने लाहौर से अन्तिम विदा लेकर परिजनों सहित हिमालय की ओर प्रस्थान किया। अलकनन्दा व भागीरथी के पवित्र संगम पर पहुँचकर उन्होंने पैदल मार्ग से गंगोत्री जाने का मन बनाया। टिहरी के समीप पहुँचकर नगर में प्रवेश करने की बजाय वे कोटी ग्राम में शाल्माली वृक्ष के नीचे ठहर गये। ग्रीष्मकाल होने के कारण उन्हें यह स्थान सुविधाजनक लगा। मध्यरात्रि में प्रो० तीर्थराम को आत्म-साक्षात्कार हुआ। उनके मन के सभी भ्रम और संशय मिट गये। उन्होंने स्वयं को ईश्वरीय कार्य के लिए समर्पित कर दिया और वह प्रो० तीर्थराम से रामतीर्थ हो गये।

सन् १९०४ में स्वदेश लौटने पर लोगों ने राम से अपना एक समाज खोलने का आग्रह किया। राम ने बाँहें फैलाकर कहा, भारत में जितनी सभा समाजें हैं, सब राम की अपनी हैं। राम मतैक्य के लिए हैं, मतभेद के लिए नहीं; देश को इस समय आवश्यकता है एकता और संगठन की, राष्ट्रधर्म और विज्ञान साधना की, संयम और ब्रह्मचर्य की।

टिहरी (गढ़वाल) से उन्हें अगाध स्नेह था। वे पुनः यहाँ लौटकर आये। टिहरी उनकी आध्यात्मिक प्रेरणास्थली थी और वही उनकी मोक्षस्थली भी बनी। १९०६ की दीपावली के दिन उन्होंने मृत्यु के नाम एक सन्देश लिखकर गंगा में जलसमाधि ले ली।

रामतीर्थ के जीवन का प्रत्येक पक्ष आदर्शमय था वे एक आदर्श विद्यार्थी, आदर्श गणितज्ञ, अनुपम समाज-सुधारक व देशभक्त, दार्शनिक कवि और प्रज्ञावान सन्त थे।

निधि शुक्ला (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



गणेश शंकर विद्यार्थी जयंती

भारत के स्वतंत्रता संग्राम में अनेक वीरों, महापुरुषों और क्रांतिकारियों ने अपने प्राणों की आहुति देकर देश को आज़ाद कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्हीं महान विभूतियों में से एक थे गणेशशंकर विद्यार्थी। वे न केवल स्वतंत्रता सेनानी थे, बल्कि एक निर्भीक पत्रकार, समाजसेवी और सच्चे राष्ट्रभक्त भी थे। उनकी जयंती हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत है, क्योंकि यह हमें उनके आदर्शों और संघर्षों की याद दिलाती है।

गणेशशंकर विद्यार्थी का जन्म 26 अक्टूबर 1890 को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले के अतरसुइया मोहल्ले में हुआ था। वे बचपन से ही तेजस्वी, संवेदनशील और न्यायप्रिय थे। पढ़ाई के दौरान ही उनमें समाज के प्रति गहरी सहानुभूति और अन्याय के खिलाफ आवाज़ उठाने का साहस विकसित हो गया। विद्यार्थी जी ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान पत्रकारिता को हथियार बनाया। उन्होंने “प्रताप” नामक अखबार की शुरुआत की, जिसमें ब्रिटिश हुकूमत की अन्यायपूर्ण नीतियों और अत्याचारों को उजागर किया। उनकी लेखनी में इतनी ताकत थी कि लोग उन्हें निर्भीक पत्रकार के रूप में जानते थे। अंग्रेज़ सरकार उनके अखबार से घबराती थी और कई बार उस पर प्रतिबंध लगाया, लेकिन विद्यार्थी जी कभी पीछे नहीं हटे।

उन्होंने पत्रकारिता को केवल समाचार देने का माध्यम नहीं, बल्कि समाज की सच्चाई दिखाने और जनजागरण का साधन बनाया। उनके लेखों से जन-जन में देशभक्ति और स्वतंत्रता का उत्साह फैलता था।

गणेशशंकर विद्यार्थी केवल लेखनी के सिपाही नहीं थे, बल्कि उन्होंने सीधे जनता के बीच जाकर भी सेवा की। 1931 में जब कानपुर में सांप्रदायिक दंगे भड़के, तब उन्होंने अपनी जान की परवाह किए बिना दंगों की आग बुझाने और निर्दोष लोगों की रक्षा करने का कार्य किया। वे दोनों समुदायों—हिंदू और मुसलमान—के बीच भाईचारा कायम करने की कोशिश करते रहे। दुर्भाग्यवश, दंगे की भीड़ में ही उनकी हत्या कर दी गई।

उनकी शहादत ने साबित कर दिया कि वे न केवल देश की स्वतंत्रता के लिए, बल्कि समाज की एकता और शांति के लिए भी अपना जीवन न्योछावर कर दिया था।

आज जब समाज में वैमनस्य और स्वार्थ की राजनीति बढ़ रही है, विद्यार्थी जी का जीवन और विचार पहले से भी अधिक प्रासंगिक हैं। उन्होंने सिखाया कि पत्रकारिता का उद्देश्य केवल सत्ता की प्रशंसा करना नहीं, बल्कि सत्य को उजागर करना और जनता की आवाज़ बनना है। साथ ही, उन्होंने हमें यह भी सिखाया कि राष्ट्र की वास्तविक शक्ति उसकी एकता और भाईचारे में है।

गणेशशंकर विद्यार्थी की जयंती केवल एक स्मरण दिवस नहीं, बल्कि यह हमें उनके आदर्शों और बलिदान को अपनाने की प्रेरणा देती है। उनका जीवन हमें सिखाता है कि सच्चा देशभक्त वही है जो समाज और राष्ट्र के लिए निःस्वार्थ भाव से काम करे। हमें उनके साहस, त्याग और निष्ठा से सीख लेकर अपने देश और समाज की सेवा करनी चाहिए।

अंजलि शर्मा (आचार्या)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



सरदार पटेल जयंती



भारत के लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम देश के इतिहास में स्वर्ण अक्षरों में लिखा गया है। वे एक महान स्वतंत्रता सेनानी, कुशल प्रशासक और देश की एकता के प्रतीक थे। उनका जन्म 31 अक्टूबर 1875 को गुजरात के नडियाद नामक स्थान पर हुआ था। उनके पिता झवेरभाई एक साधारण किसान थे और माता लाडबाई धार्मिक विचारों वाली महिला थीं।

सरदार पटेल ने कठिन परिश्रम से अपनी पढ़ाई पूरी की और वकालत की शिक्षा प्राप्त की। वे एक सफल वकील बने, परंतु देशभक्ति की भावना ने उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन की ओर प्रेरित किया। महात्मा गांधी के विचारों से प्रभावित होकर उन्होंने ब्रिटिश शासन के विरुद्ध आंदोलन में सक्रिय भाग लिया। वे अहमदाबाद के खेड़ा सत्याग्रह और बारडोली सत्याग्रह के प्रमुख नेता रहे। बारडोली आंदोलन में किसानों को अन्याय से मुक्ति दिलाने के कारण उन्हें “सरदार” की उपाधि दी गई।

भारत को स्वतंत्रता मिलने के बाद, देश के सामने सबसे बड़ी चुनौती 562 रियासतों को एकजुट करने की थी। सरदार पटेल ने अपनी अद्भुत कूटनीति, दृढ़ संकल्प और नेतृत्व क्षमता से इन रियासतों का भारत में विलय कराया। उनके इस कार्य के कारण उन्हें “भारत का लौहपुरुष” कहा गया।

वे भारत के पहले उपप्रधानमंत्री और गृह मंत्री बने। उन्होंने भारतीय प्रशासन की नींव को मजबूत किया और भारतीय सेवाओं (IAS, IPS) की स्थापना में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सरदार पटेल का जीवन सादगी, ईमानदारी और राष्ट्रभक्ति से परिपूर्ण था। उनका निधन 15 दिसंबर 1950 को हुआ, लेकिन उनके विचार और योगदान सदैव अमर रहेंगे। आज भी जब हम एकता और राष्ट्रीय एकजुटता की बात करते हैं, तो सरदार पटेल की याद स्वाभाविक रूप से आती है। उनके सम्मान में गुजरात में “स्टैच्यू ऑफ यूनिटी” का निर्माण किया गया है, जो विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है।

महेन्द्र (आचार्य)

सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा



राष्ट्रीय एकता दिवस

राष्ट्रीय एकता दिवस प्रत्येक वर्ष 31 अक्तूबर को मनाया जाता है। यह दिन भारत के लौह पुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती के अवसर पर मनाया जाता है। सरदार पटेल ने स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद देश की 562 रियासतों को एकसूत्र में बाँधकर भारत को एक अखंड राष्ट्र बनाया।

भारत के इतिहास में सरदार वल्लभभाई पटेल का नाम स्वर्ण अक्षरों में अंकित है। उन्हें “लौह पुरुष” और “भारत के लौह पुरुष” के नाम से जाना जाता है। प्रत्येक वर्ष उनकी जयंती बड़े हर्ष और उत्साह के साथ मनाई जाती है। सरदार पटेल स्वतंत्रता संग्राम के महान नेता थे। महात्मा गांधी के मार्गदर्शन में उन्होंने देश की आज़ादी में सक्रिय भूमिका निभाई। आज़ादी के बाद सबसे बड़ा कार्य था – भारत की सैकड़ों रियासतों को एकजुट करना। पटेल जी ने अपनी दृढ़ इच्छाशक्ति, साहस और कुशल कूटनीति से पाँच सौ से अधिक रियासतों का विलय कराकर भारत को एक सशक्त राष्ट्र बनाया। इसी कारण उन्हें “भारत का लौह पुरुष” और “एकता का शिल्पकार” कहा जाता है। उनकी जयंती पर देशभर में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते हैं। विद्यालयों में बच्चे भाषण, निबंध, नाटक तथा प्रभात फेरी के माध्यम से उनके जीवन से प्रेरणा लेते हैं। केंद्र सरकार ने उनकी स्मृति में गुजरात में “स्टैच्यू ऑफ यूनिटी” का निर्माण कराया है, जो विश्व की सबसे ऊँची प्रतिमा है। यह प्रतिमा हमें उनके अदम्य साहस और योगदान की याद दिलाती है।

आज के युवाओं के लिए सरदार पटेल का जीवन एक प्रेरणा है। वे हमें सिखाते हैं कि कठिन परिस्थितियों में भी धैर्य, साहस और एकता बनाए रखनी चाहिए। सरदार वल्लभभाई पटेल की जयंती हमें एकता, साहस और कर्तव्यनिष्ठा का संदेश देती है। हमें उनके बताए मार्ग पर चलकर देश की अखंडता और समृद्धि में योगदान देना चाहिए।

अंजलि शर्मा (आचार्या)
सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा

विभागीय गणित और विज्ञान मेला





विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान द्वारा संचालित सरस्वती शिशु मंदिर, C-41, सेक्टर-12, नोएडा के भैया/बहनों ने विभागीय गणित और विज्ञान मेले में अति शोभनीय प्रदर्शन किया। इस प्रतियोगिता का आयोजन गोविंदपुरी मोदीनगर में किया गया। जिसमें 14 विद्यालयों के भैया/बहनों ने प्रतिभागिता की। हमारे विद्यालय के कुल 17 भैया/बहनों ने विभिन्न प्रतियोगिताओं में भाग लिया। जिनमें से 14 भैया/ बहनो ने मेडल प्राप्त किए।



शिक्षक दिवस



सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में शिक्षक दिवस मनाया गया। शिक्षक दिवस भारत के द्वितीय राष्ट्रपति व महान शिक्षक डॉ. राधाकृष्णन की जयंती के रूप में मनाया गया। उनके आदर्श और शिक्षण दर्शन से प्रेरणा लेकर भैया-बहिन और शिक्षक दोनों सीखते हैं। तथा भैया-बहनों ने उनकी प्रेरणादायक बातों का उल्लेख किया।

अनन्त चतुर्दशी



सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में अनंत चतुर्दशी की जयंती मनाई गई। यह त्योहार भारतीय संस्कृति, धार्मिक परंपराओं और नैतिक मूल्यों को भैया-बहनों में संजोने का माध्यम बनता है। अनंत चतुर्दशी का मुख्य संदेश धैर्य, भक्ति और विश्वास का होता है जो भैया-बहनों को अपनी जड़ों से जोड़ता है।

प्रांतीय विज्ञान एवं वैदिक गणित मेला







विद्या भारती अखिल भारतीय शिक्षा संस्थान से सम्बद्ध शिशु शिक्षा समिति प.उ.प्र. के अन्तर्गत चलने वाले सरस्वती शिशु मन्दिरों का दिनांक - 8/09/25 व 9/09/25 दो दिवसीय प्रांतीय विज्ञान एवं वैदिक गणित मेला सरस्वती शिशु मन्दिर C-41 सेक्टर 12 नोएडा में उद्घाटन हुआ। जिसमें मेरठ प्रान्त के कक्षा चतुर्थ से लेकर अष्टम तक के छात्र छात्राओं ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम में लगभग 200 छात्र-छात्राएं एवं आचार्य उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त शिशु शिक्षा समिति के मंत्री श्री प्रदीप भारद्वाज, प्रदेश निरीक्षक श्री मदनपाल जी प्रतियोगिता संयोजक श्री संजीव राजपूत एवं नगर के अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन श्री उमेश कुमार (प्रधानाचार्य) रामपुर ने किया। निर्णायक मंडल में प्रमोद जी सेवानिवृत्त, न्यायाधीश इंदिरापुरम श्री साकेश शर्मा इलेक्ट्रॉनिक इंजीनियर नोएडा, भावना शर्मा, अंग्रेजी सम्भाषण केंद्र नोएडा की बहनो का योगदान रहा। श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा (प्रधानाचार्य) ने अतिथियों का परिचय एवं आभार व्यक्त किया।

प्रांतीय संस्कृति महोत्सव



दिनांक - 12/09/25 व 13/09/25 को स्वामी विवेकानंद सरस्वती विद्या मंदिर, साहिबाबाद में प्रांतीय संस्कृति महोत्सव का आयोजन किया गया। जिसमें हमारे विद्यालय सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा ने लोकनृत्य - प्रथम स्थान और प्रश्न मंच- तृतीय स्थान प्राप्त किया। विद्यालय परिवार की ओर से सभी भैया-बहिनों को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।



ओजोन दिवस



दिनांक- 16/09/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा के प्रातः वंदना सत्र में मेरठ प्रांत से मेरठ प्रांत शैक्षिक प्रमुख एवं पूर्व प्रदेश निरीक्षक भारतीय शिक्षा समिति श्री महेश चंद शर्मा जी का आगमन हुआ। इसी अवसर पर आज विश्व ओजोन दिवस भी मनाया गया। इसका मुख्य उद्देश्य भैया-बहिनों को ओजोन परत के महत्व के बारे में जागरूक करना, ओजोन परत को नुकसान पहुंचाने वाले पदार्थों के बारे में बताना और उन्हें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रोत्साहित करना है, ताकि वे भविष्य की पीढ़ियों के लिए पृथ्वी की रक्षा कर सकें। भैया-बहिनों को ओजोन-अनुकूल उत्पादों और हरित विकल्पों के उपयोग को प्रोत्साहित करके व दैनिक जीवन में पर्यावरण-अनुकूल आदतें अपनाएं इसके लिए भी जागरूक किया गया। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य श्री देवेन्द्र कुमार शर्मा जी ने भैया-बहिनों को प्रेरणादायक ज्ञान प्रदान करने के लिए अतिथि महोदय जी का आभार व्यक्त किया। 21

विश्वकर्मा दिवस



दिनांक-17/09/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में विश्वकर्मा जयंती मनाई गई। इस अवसर पर विद्यालय के आचार्य श्री दीपक जी ने बताया कि यह पर्व भगवान विश्वकर्मा जी को समर्पित है, जिन्हें हिंदू धर्म में वास्तुकार, इंजीनियर और शिल्पकार माना जाता है। इस दिन कारीगर, इंजीनियर, मशीनरी से जुड़े लोग और विभिन्न व्यवसायी अपने औजारों, उपकरणों और कार्यस्थलों की पूजा करते हैं। यह पूजा उनके काम में समृद्धि, सफलता और सुरक्षा की कामना के लिए की जाती है। अंत में विद्यालय के प्रधानाचार्य जी ने भैया-बहनों को जयंती की विशेषता बताते हुए कहा कि भगवान विश्वकर्मा जी ने न केवल नगर और भवनों का निर्माण किया, बल्कि देवताओं के लिए भी दिव्य अस्त्र-शस्त्र बनाए, जिनमें भगवान विष्णु का सुदर्शन चक्र, भगवान शिव का त्रिशूल, ब्रह्माजी का ब्रह्मास्त्र, यमराज का कालदंड तथा पाश और इंद्र देव का वज्र शामिल हैं। इसी प्रकार भैया-बहनों हमें भी दृढ़ निश्चय कर अपने कार्य के प्रति अग्रसर रहना चाहिए।

अतिथि आगमन



दिनांक -20/09/2025 दिन शनिवार को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा, वंदना सत्र में English communication में प्रशिक्षण प्राप्त आचार्यों का विद्यालय भ्रमण हेतु आगमन।

महाराजा अग्रसेन जयंती



दिनांक- 22/09/25 को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में महाराजा अग्रसेन जयंती मनाई गई। इस अवसर पर महाराजा अग्रसेन की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलन व पुष्पार्चन किया। महाराजा अग्रसेन जयंती मनाने का उद्देश्य महाराजा अग्रसेन के सिद्धांतों, जैसे समानता, सामाजिक न्याय, करुणा, अहिंसा, त्याग और सहयोग को याद करना और उन्हें बढ़ावा देना है। इस अवसर पर समाज में समानता, सहयोग और सामुदायिक सेवा के संदेश को बढ़ावा देने वाले कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है।

पं दीनदयाल उपाध्याय जयंती



दिनांक- 25/09/25 को सरस्वती शिशु मंदिर नोएडा में पंडित दीनदयाल उपाध्याय जयंती मनाई गई। भैया-बहिन जयंती मनाने का उद्देश्य है उनके विचारों, सिद्धांतों और राष्ट्र निर्माण में उनके योगदान को स्मरण करना तथा समाज को उनके आदर्शों से प्रेरित करना। यह दिन उनके जीवन, उनके दर्शन और उनके द्वारा प्रतिपादित 'एकात्म मानववाद' के संदेश को जन-जन तक पहुँचाने के लिए मनाया जाता है।

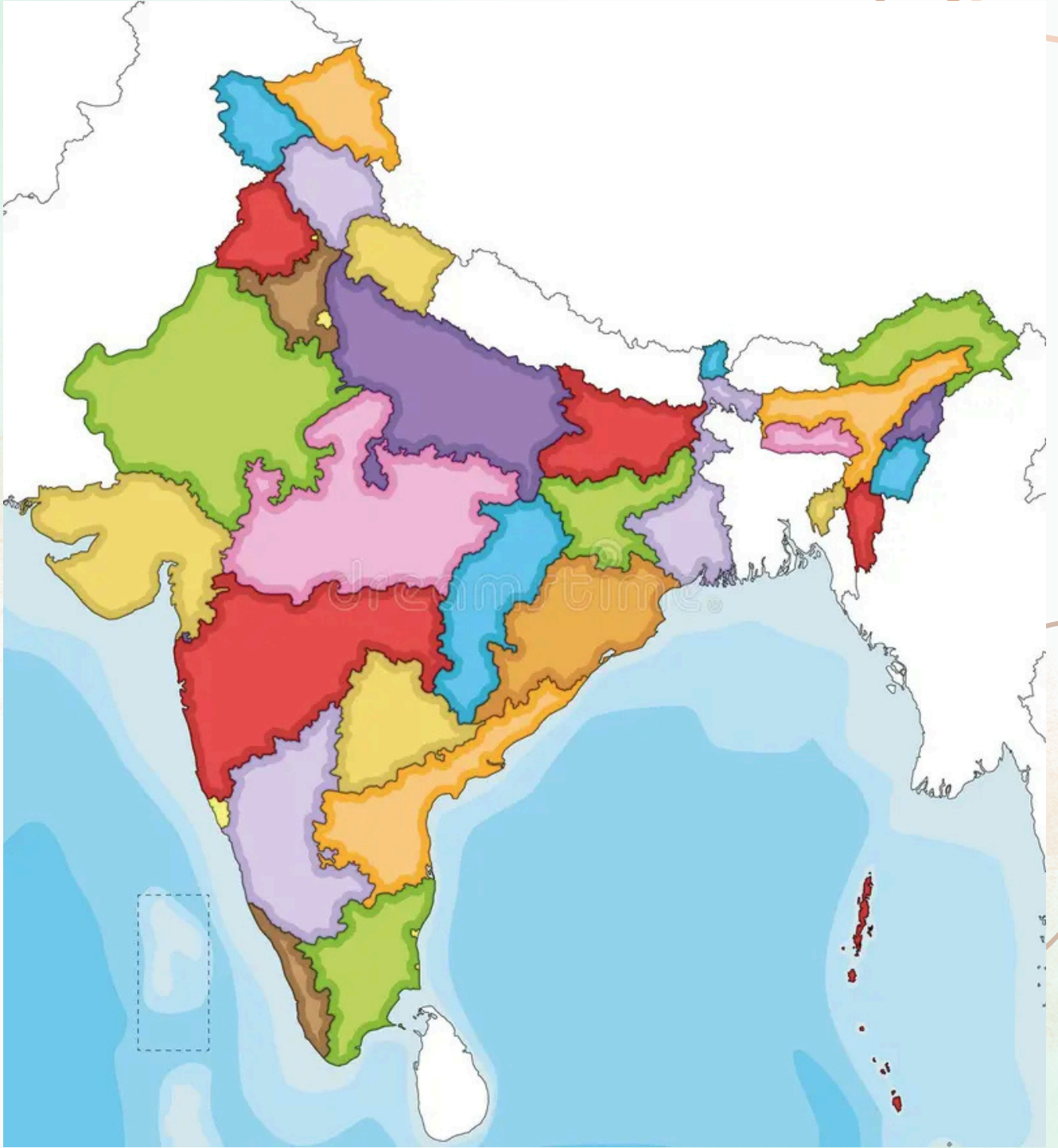
हवन कार्यक्रम





दिनांक- 29/09/2025 दिन को सरस्वती शिशु मंदिर, नोएडा में कक्षा अरुण से पंचम तक के सितंबर माह में जन्मे भैया/बहिनों की दीर्घायु के लिए जन्मोत्सव पर हवन के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जिसमें अग्निहोत्र करते यजमान- और साथ ही अन्य अभिभावक बंधु भी उपस्थित रहे। हवन में बैठने और मंत्र सुनने से भैया-बहिनों को मानसिक शांति मिलती है और भैया-बहिनों में आध्यात्मिकता का विकास होता है।

बताओ तो जानें



दिए गए राज्यों को मानचित्र में दर्शाए

आंध्र प्रदेश, अरुणाचल प्रदेश, असम, बिहार, छत्तीसगढ़, गोवा, गुजरात, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, झारखंड, कर्नाटक, केरल, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नागालैंड, ओडिशा, पंजाब, राजस्थान, सिक्किम, तमिलनाडु, तेलंगाना, त्रिपुरा, उत्तराखंड, उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल।



पत्रिका अंक प्रश्नोत्तरी



1. भारतीय वायुसेना का आदर्श वाक्य क्या है?
2. गांधी जी का जन्म कब हुआ था?
3. जय जवान जय किसान का नारा किसने दिया था?
4. विश्व डाक दिवस कब मनाया जाता है ?
5. भगवान धनवंतरी किस शास्त्र के देवता माने जाते हैं?
6. धनवंतरी का पृथ्वी लोक में अवतरण कब हुआ था?
7. सरदार वल्लभ भाई पटेल को सरदार की उपाधि क्यों दी गई?
8. राष्ट्रीय एकता दिवस क्यों मनाया जाता है?
9. ओजोन परत को सबसे ज्यादा नुकसान किससे है?
10. स्वदेशीकरण पर बल किस महापुरुष द्वारा दिया गया?

आलोक- उपरोक्त सभी प्रश्नों के उत्तर इसी अंक के लेखों में विद्यमान हैं
अतः इसी अंक के उत्तर मान्य होंगे।

कक्षा- द्वितीय से पञ्चम तक के सभी भैया/बहिनों को ई- पत्रिका के पृष्ठ क्रमांक 28 व 29 में दिए प्रश्नों के उत्तर कक्षाचार्य जी के व्हाट्सप्प पर दिनांक - 20 अक्टूबर 2025 तक भेजने होंगे।